Project Method - प्रोजेक्ट विधि

यह अर्थपूर्ण क्रिया आधारित एक शिक्षण विधि है। इस विधि में अप्रत्यक्ष रूप से क्रिया द्वारा ज्ञान, कौशल, आदर्श आदि अर्जित किया जाता है।

सामान्यतः प्रोजेक्ट विधि को डब्ल्यू. एस. कल-पैट्रिक के नाम से जाना जाता है। इनकी शोध पत्र 'द प्रोजेक्ट मेथड' वर्ष 1918 में प्रकाशित हुई। इन्होंने इस शोध पत्र में अर्थपूर्ण क्रिया, समस्या, समाधान, क्रिया करते हुए छात्र की आवश्यकता एवं रुचि, अधिगम और आचरण पर बल दिया।

इस पद्धति द्वारा कोई कार्य समस्या के रूप में बच्चों के सामने रख दिया जाता है। इस समस्या को बालक को स्वयं सुलझाना होता है। कार्य करते समय जो समस्या खड़ी होती है उनसे संबंधित विषयों के ज्ञान द्वारा उस समस्या को हल करने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार छात्र को अनेक विषयों का ज्ञान स्वतः हो जाता है। जैसे- यदि बालक पुस्तक विक्रेता बनते हैं तो पुस्तक को बाहर से लाना, दुकान में सही जगह रखना, उसे विक्रय करना आदि कार्य स्वयं करेंगे तो कई विषयों की जानकारी उन्हें प्राप्त होगी।

प्रोजेक्ट विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों की योग्यता के अनुसार होनी चाहिए। जैसे- छोटी कक्षाओं के लिए साधारण प्रोजेक्ट तथा ऊँची कक्षाओं के लिए जटिल होनी चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी को प्रोजेक्ट चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। यदि कोई विद्यार्थी प्रोजेक्ट चुनने में असमर्थ हो तो शिक्षक को उसे प्रोत्साहित करना चाहिए।

समय-समय पर शिक्षक को बालक

के कार्य की प्रगति के बारे में जानकारी लेते रहना चाहिए, जिससे उन्हें यह मालूम पड़ जाए कि कार्य सही दिशा में हो रहा है या नहीं। यदि कोई समस्या हो तो शिक्षक को सुलझाना चाहिए।

विज्ञान में प्रोजेक्ट के प्रकार

1. गवेषणात्मक प्रोजेक्ट
2. संग्रहात्मक प्रोजेक्ट
3. रचनात्मक प्रोजेक्ट
4. निरीक्षणात्मक प्रोजेक्ट
5. रक्षात्मक प्रोजेक्ट
6. सूचनात्मक प्रोजेक्ट

प्रोजेक्ट के अंग या भाग

1. व्यावहारिक कार्य - किसी उपयोगी सामग्री की संरचना करना।
2. बोध - सौंदर्य का अनुभव करना
3. समस्या समाधान - समस्या हल करना।
4. ज्ञान और कौशल पर अधिकार - ज्ञान एवं कौशल पर क्रिया करना।

प्रोजेक्ट विकसित करने के पद - (Steps in developing a project)

1. उद्देश्य निर्धारित करना (Purposing)
2. नियोजन (Planning) करना
3. निष्पादन करना (Performance)
4. मूल्यांकन करना (Evaluation)

Scanned with CamScanner

प्रोजेक्ट विधि के गुण -

1. यह विधि बालकों को स्वतंत्र रूप से सोचने, विचारने और कार्य करने का अवसर प्रदान करती है। वे तथ्यों को दूसरे के कहने मात्र से नहीं मान लेते बल्कि उन्हें स्वयं खोजकर ग्रहण करते हैं।

2. इस विधि में छात्र स्वयं अपना कार्य नियोजित करते हैं, उसका क्रियान्वयन करते हैं तथा मूल्यांकन भी करते हैं। इस प्रकार वे निर्णय करना सीख जाते हैं।

3. छात्र को प्राकृतिक वातावरण में कार्य करने का अवसर प्राप्त होता है। इसमें रटने का कोई स्थान नहीं रहता है।

4. इस विधि के द्वारा कार्य करने से छात्रों में धैर्य, कर्मनिष्ठता तथा आत्मसंतुष्टि की भावना विकसित होती है। छात्र में विधिपूर्वक कार्य करने की क्षमता उत्पन्न होती है।

5. यह विधि पाठ्यक्रम के सभी विषयों में परस्पर संबंध स्थापित करती है साथ ही इसे दैनिक जीवन से भी जोड़ती है।

6. इस विधि के द्वारा सम्पादित कार्य अधिक वास्तविक और सामाजिक परिवेश में होता है। अतः, उनमें सामाजिक भावना उत्पन्न होती है।

7. छात्र प्रोजेक्ट चयन के लिए स्वतंत्र रहता है, अतः वे अपनी आवश्यता एवं रुचि के अनुसार कार्य करता है।

Scanned with CamScanner

प्रोजेक्ट विधि की सीमाएं

1. इस विधि में अधिक समय तथा खर्च की आवश्यकता होती है। विभिन्न प्रकार की सामग्री, यंत्र, पुस्तक के बिना इस विधि से अध्ययन संभव नहीं है।

2. इस विधि में छात्र स्वयं मूल्यांकनकर्ता होते हैं, अतः जाँच और परीक्षा का कोई स्थान नहीं है।

3. निर्धारित पाठ्यचर्या का पूरा होना संभव नहीं है।

4. लिखित कार्य तथा अभ्यास का इसमें कोई स्थान नहीं है।

Scanned with CamScanner